ISSN 2320 - 4494
RNI No. MAHAUL/2008/13/1/2013-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal
Volume : I Issue : XVII Janu.- March. 2017

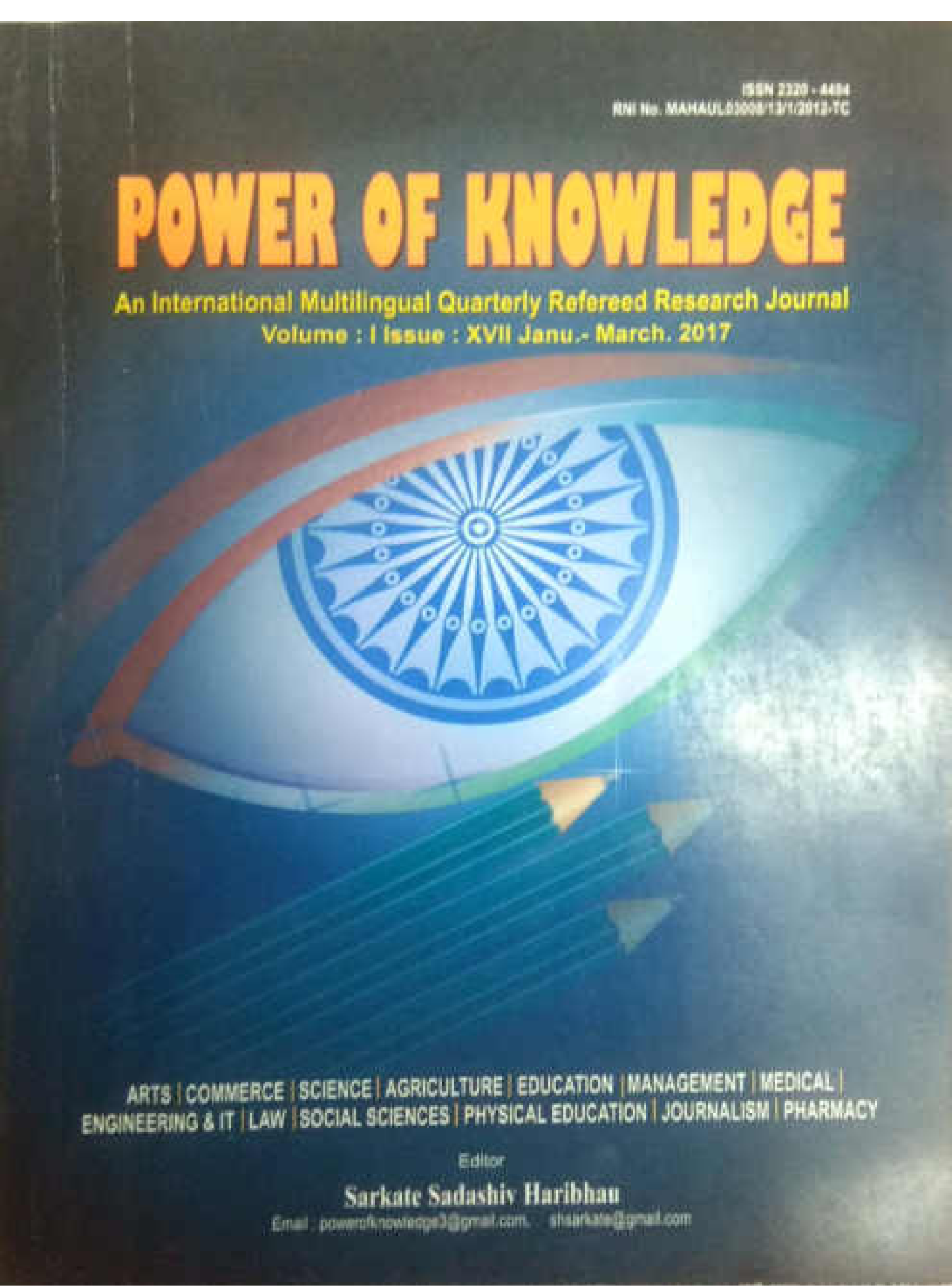

ARTS | COMMERCE | SCIENCE | AGRICULTURE | EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL | ENGINEERING & IT | LAW | SOCIAL SCIENCES | PHYSICAL EDUCATION | JOURNALISM | PHARMACY

Editor
Sarkate Sadashiv Haribhau
Email : powerofknowledge3@gmail.com, shsarkate@gmail.com

Scanned with CamScanner

अनुक्रमाणिका

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्रं.
१	Paternalism as a Theme Depicted in Nadine Gordimer's The Lying Days	Dr. Beena Rathi & Neetu Agrawal	१
२	Rainfall Intensity of Beed District, A Geographical Study	Mr. Umre Rupchand	५
३	Ironic Consciousness as a Theme Depicted in Nadine Gordimer's A World of Strangers	Dr. Beena Rathi & Neetu Agrawal	९
४	A Study of Financing of Infrastructure Projects in India	Dr. Dilip Misal	१२
५	Social Impact of Tourism Development in Maharashtra &Rajasthan	Dr. Bapusaheb Mluske	१७
६	Women Empowerment through Cooperative Societies	Dr. Anjali Bhusare	१८
७	GOODS AND SERVICE TAX (GST) IN INDIA	Dr. Raut Radheshyam Kisanrao,	२१
८	समाजव्यवस्था आणि स्त्रीवाद : एक अभ्यास	प्रा. डॉ. भारती रेवडकर	२९
९	यशवंतराव चव्हाण आणि राष्ट्रीय चळवळ	प्राचार्य डॉ. वसंत बिरादार	३४
१०	बहिणाबाई चौधरींची कविता	प्रा. रमेश नागवर	३७
११	लेखिकेच्या कादंबरीतून आलेले विषय	प्रा. विठ्ठल भानुसे	४०
१२	स्त्रीवाद आणि मराठी साहित्य	प्रा. शकुंतला भारंबे	४४
१३	वेधळा या कादंबरीतल स्त्री चित्रण	प्रा. डॉ. सोपान सुरवसे व श्री. गोविंद गरड	४८
१४	१९८० नंतरची मराठी ग्रामीण कविता आणि सामाजिक जिवन	प्रा. रेखा इंगोले	५२
१५	मराठवाड्यातील कष्टकरी स्त्री	प्रा. संतोष देशमुख	५७
१६	ग्रामीण साहित्य चळवळः दिशा आणि दशा	प्रा. येवरे मधुकर	६१
१७	१९८० नंतरची मराठवाड्यातील दलित कथा	प्रा. डॉ. युवराज धबडगे	६५
१८	प्रा. रावजी राठोड यांच्या तमान मधून चित्रीत झालेले वास्तव	चंदनसिंग ठाकूर	६८
१९	अगारी बोलीतील काव्य सौंदर्य	प्रा. डॉ. मोनिया बनसोडे	७१
२०	कवितेची निर्मिती प्रक्रिया	प्रा. लक्ष्मण गित्ते	७५
२१	देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपी	प्रा. रजनी शिखरे	७८
२२	निराला के काव्य में सामाजिक चेतना एक अध्ययन	प्रा. गायकवाड प्रकाश	८०
२३	हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जिवन का चित्रण	प्रा. उत्तम जाधव	८४
२४	नाबार्ड बँकेचे पुर्नवित्त पुरवठ्याचे कार्य	प्रा. डॉ. दास डी.के.	८८
२५	जलयुक्त शिवार अभियान एक दृष्टीक्षेप	सौ. प्रिती महाजन	९२

Power of Knowledge Volume : I Issue : XVII Janu.-March.2017 ISSN 2320-...

'देवनागरी' एक वैज्ञानिक लिपि

डॉ.रजनी मिश्रा
हिन्दी विभाग...
[illegible] महाविद्यालय, [illegible]
[illegible]

किसी भी भाषा के साथ उसकी लिपि का संबंध होता है। जब हम संस्कृत, हिन्दी या नेपाली की बात करते हैं, तो सीधे-सीधे इसका दृश्य रूप 'देवनागरी लिपि' के माध्यम से ही आकार लेता है। इसी तरह अंग्रेजी की बात रोमन के बिना अधूरी है। तब प्रश्न उठता है कि किसी लिपि की वैज्ञानिकता के प्रतिमान सार्वदेशीय और सार्वकालिक होंगे कि एकदेशीय और एककालिक? वस्तुत: वैज्ञानिकता के प्रतिमान हैं तो सार्वदेशीय हैं किन्तु उनकी बात, किसी न किसी भाषा के संदर्भ में ही होनी चाहिए। भारतीय सन्दर्भ में देखें तो देवनागरी यहाँ की प्राय: अधिकांश भाषाओं की दृष्टि से वैज्ञानिकता के निकष पर खरी उतरती है। उसकी सबसे बड़ी शक्ति है- आन्तरिक तार्किक एवं सुनिश्चित व्यवस्था, जिसका हम आज भी संस्कृत और देवनागरी के परिप्रेक्ष्य में साक्षात अनुभव करते हैं। इस सन्दर्भ में जब भी रोमन या कोई दूसरी लिपि आती है, हमारी भाषाओं के सही उच्चारण और उनके उपयुक्त लिप्यंकन के मार्ग में अवरोध खड़े हो जाते हैं। फिर इस दिशा में उच्चारण एवं लिपि चिन्ह का तादात्म्य संबंध भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

किसी लिपि की वैज्ञानिकता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें प्रत्येक लिपि - संकेत से मात्र एक-एक ध्वनि की ही अभिव्यंजना हो। इससे लिपि-संकेतों का पढ़ना सरल हो जाता है। देवनागरी लिपि के किसी भी संकेत का किसी भी शब्द में किसी भी स्थिति में प्रयोग करने पर उसके उच्चारण में कोई अन्तर नहीं आता है तथा उसका उच्चारण वही रहता है, जो स्वतंत्र लिपि - संकेत के रुप में उच्चरित होता है।

किसी भी वैज्ञानिक लिपि में किसी भाषा की समग्र ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता भी होनी चाहिए। अन्य संसार में प्रचलित समस्त लिपियों के बीच यह गुण जितना देवनागरी लिपि में है, उतना किसी अन्य लिपि में नहीं है। इस गुण के आधार पर देवनागरी लिपि में किसी भी उच्चरित इकाई का स्पष्ट अभिलेखन संभव हो पाता है।

देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है क्योंकि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है तथा जो लिखा जाता है, वही बोला जाता है तथा समझा जाता है। इस लिपि में वैज्ञानिकता के साथ आदर्श लिपि के सभी गुण मौजूद हैं, जिसे हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं।

१. देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजन की दृष्टि से वर्गीकरण किया गया है। पहले स्वर तथा बाद में व्यंजन वर्णों को स्थान दिया गया है। इस प्रकार का वर्गीकरण रोमन लिपि में नहीं है जैसे - A स्वर के बाद B व्यंजन का आना तथा अन्य स्वरों के बाद भी व्यंजनोंकी आवृत्ति इस लिपि में हुई है, जो उचित नहीं है।

२. देवनागरी लिपि में स्वर ध्वनियों के लिए १३ वर्ण हैं। इन वर्णों के अपने अक्षर तथा मात्रा चिन्ह हैं जिनका अपना अलग अलग महत्व है। स्वर वर्ण तथा मात्राएँ व्यंजन वर्णों के साथ प्रयोग होने पर अपनी पहचान तथा अस्तित्व बनाये रखते हैं तथा उच्चारण के समय उच्चरित होते हैं किन्तु रोमन लिपि के स्वर वर्ण व्यंजन वर्ण के साथ मिलकर उच्चारण प्रस्तुत नहीं करते।

३. देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजनों का ध्वनियों के उच्चारण आधार पर वर्गीकरण किया गया है। प्रत्येक ध्वनि एक निश्चित स्थान से उच्चरित होती है। व्यंजन ध्वनियों को कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, अन्त:स्थ, ऊष्म तथा अन्त में संयुक्त वर्ण प्रस्तुत किये गये हैं। वर्गीकरण में अघोष तथा सघोष क्रम के ध्यान रखने के साथ - साथ पहले अल्पप्राण

फिर महाप्राण और अन्त में अनुनासिक ध्वनियों को स्थान दिया गया है। अन्तःस्थ तथा ऊष्म ध्वनियाँ पृथक रखी गयी है। ऐसा ध्वन्यात्मक वर्गीकरण अन्य किसी लिपि में दिखाई नहीं देता।

४. देवनागरी लिपि की सबसे बड़ी विशेषता एक ध्वनि के लिए एक लिपि चिन्ह है जबकि रोमन लिपि में 'औ' के लिए- au, ou I ई के लिए-i, ee I फ, के लिए- ph,f I ज के लिए z,j,g का प्रयोग किया जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण और भी है। एक ध्वनि के लिए अनेक लिपि चिन्हों का प्रयोग पूर्णतया अवैज्ञानिक है।

५. देवनागरी लिपि में जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है जबकि रोमन लिपि में उच्चारण के समय कभी- कभी वर्ण ध्वनि का लोप हो जाता है। जैसे- Knoweldge, kinfe, know में k ध्वनि का लोप जो लिपि की अशुद्धता का प्रतीक है।

६. रोमन लिपि में देहली, कर्नल, लेफ्टीनेन्ट, लखनऊ आदि शब्दों के लेखन उच्चारण में जमीन आसमान का अन्तर है।

७. देवनागरी में वर्णों का उच्चारण निश्चित है जबकि रोमन लिपि में एक लिपि संकेत से अनेक ध्वनियाँ व्यक्त की जाती है। जैसे, 'O' वर्ण go तथा to में अलग-अलग ध्वनियों व्यक्त करता है तथा chemical, chandra में ch 'क' तथा 'च' को अभिव्यक्त करता है।

८. देवनागरी लिपि में मात्राओं तथा अनुनासिक चिन्हों का प्रयोग कर हम अपने बड़ों, गुरुओं तथा अधिकारियों का सम्मान प्रस्तुत करते हैं। जैसे- आता है, आते है आदि।

९. वेद देवनागरी लिपि में लिपिबद्ध है जिनमें किसी प्रकार का क्षेपक प्रयोग सम्भव नहीं हो सका। इसका मुख्य कारण उदात्त अनुदात्त स्वरित चिन्हों का प्रयोग है। इन चिन्हों के प्रयोग से अर्थ भी बदल जाते हैं जो देवनागरी की प्रमुख विशेषता है।

१०. लेखन की दृष्टि से देवनागरी श्रेष्ठ लिपि है क्योंकि जबकि रोमन लिपि में कैपिटल तथा स्माल लेटर्स का प्रयोग किया जाता है। वाक्य के प्रारम्भ तथा Proper Noun के प्रयोग में शब्द का पहला अक्षर कैपिटल लेटर में लिखा जाता है। Letters को अलग-अलग लाईन के दृष्टिगत लिपिबद्ध करने की परम्परा है जो उचित प्रतीत नहीं होती।

११. देवनागरी लिपि सुपाठ्य तथा संदेह रहित है क्योंकि इस लिपि में एक संकेत से दूसरे संकेत का भ्रम नहीं होता।

इस बात में किसी भी प्रकार का कोई शक नहीं है कि, देवनागरी लिपि अपनी कलात्मकता, सुन्दरता तथा सुडौलता के बलपर पूरे विश्व में प्रसिध्द है तथा मुद्रण और टंकण में भी इसका प्रयोग तेजी से बढ़ा है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि अपने विशिष्ट तथा अद्वितीय गुणों के कारण देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है, यद्यपि आज भी इसमें सुधार की अनेक संभावनायें विद्यमान है। इसकी ध्वन्यात्मकता तथा वैज्ञानिकता असंदिग्ध है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. प्रयोजनमूलक हिंदी : अधुनातन आयाम, डॉ.अंबादास देशमुख
२. नागरी संगम- अंक ११०, अप्रैल- जून २००६
३. नागरी संगम- अंक १२६, अप्रैल-जून २०१०.

Scanned with CamScanner